दूदमाने आलिया फ़िरदौसिया-

* हर्फ अव्वल-

*** ب اسم اللّٰہُ الرحمن الرحیم العلی العظیم العلیم الحکیم۰**
اِنَّ اللّٰہٗ عَلِیْمٌ قَدِیْرٌ۰۔

*** अल्लाह के मुबारक नाम से किताब का आगाज़ करता हूँ जो रहमान व रहीम भी है, जो आला अज़मत वाला भी है! जो अपने इल्म व हिकमत में वो नुमाया शान रखता है कि कायनात के कुल मख़लूक का इल्म उसके इल्म व हिल्म के आगे एक क़तरे की भी हैसियत नहीं रखता! और ख़ूब दुरूदो सलाम हो उसके तमाम सिफ़ात के मँम्बा व सरचश्मा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम पर व आपकी आलो असहाब पर जिनके मुबारक वसीलह से इल्म इलाही हज़रते इंसान का मुक़द्दर बन सका! वो इस तरह कि अल्लाह अलीउल अज़ीम ने अपने जिस मख़सूस व पोशीदह इल्म को अपने महबूब नबी व रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम पर ज़ाहिर किया उसके महरमे राज़दार आप सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के महबूब हज़रत मौला इमाम अली अलैहिस्सलाम ठहरें! बस सरकार अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया -**

"انا مدينة العلم وعلي بابها"

*** बस इल्म इलाही का शहर आप सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम हैं! और उस शहर का वाहिद दरवाज़ा हज़रत मौला अली अलैहिस्सलाम हैं! कि जिनके चौखट से इल्म इलाही की ख़ैरात तक़सीम की जाती रही है! और जिस ख़ैरात से एक इंसान की रसाई इंसान कामिल के आला मुक़ाम तक हो सकी जिनके लिए अल्लाह के जानिब से नुवैद "फिरदौस" सुनाई गई !**

*** बस इन्हीं इंसान कामिल में से एक जमाअत सुफ़्फ़ा " दूदमाने फ़िरदौसिया" से मशहूर व मारूफ़ हुआ! और फ़कीर के नज़दीक**

यहाँ फ़िरदौसिया से मुराद फ़िरदौस से है! क्योंकि हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह ऐसे शैख़ कामिल थें कि जिस किसी इंसान पर अपनी निगाहे कीमिया असर डालते उसको सिफ़ते नफ़्स और इस बशरी लिबास नासूत की क़ैद से आज़ाद करवा कर एक ही पल में आलमें अनफ़्स के आला मुक़ाम, मक़ामे जबरूत पर पहुँचा देते! जहां न रियाज़त है न मुजाहेदात न तस्बीह तहलील है और न ही रुकुउ सुजूद बस ये रूह की सिफ़त है जहाँ इस का फ़ेल सिफ़ात हमीदह है यानी ज़ौक़ शौक तलबे वज्द सुक्र सहू और महू! और इंसान इसी मुक़ाम पर पहुँच कर इंसान कामिल हो जाता है जिसे क़ुरआन ने हज़रत इंसान पुकारा है! और जिनके लिए अल्लाह के तरफ़ से जन्नतउल फ़िरदौस की बशारत दी गई है!

* लिहाज़ा यह सिलसिला ऐसा आला और अरफ़ा सिलसिला है कि तस्सवुफ़े इस्लाम की दुनिया पर हमेशा मुम्ताज़ व मारूफ़ रहा है! यह सिलसिला तमाम सलासिल ए औलिया का सरचश्मा और तमाम सलासिल ए औलिया से क़वी तर रहा है! जिसको पूरी दुनिया रूहानी और ऐतक़ादी तौर पर तस्लीम करती आई है! और जिसके जद् आला हज़रत सुल्तान-उल-आरिफ़ीन इमाम-उल-आशिक़ीन वली तराश शैख़ुल इस्लाम नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह हैं! जिन से तस्सवुफ़ का यह शजरह तूबा परवान चढ़ा और बर्गोबार लाया!

* फ़कीर आक़िब क़ुतबी-

* तारीख़ ख़ानदाने आलिया कुबराविया:-

जैसा कि पहले ये बयान हो चुका है कि इस सिलसिले आलिया की अस्ल हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह से है! जो मुरीद और ख़लीफ़ा हज़रत अबु नजीब सोहरवर्दि रहमतुल्लाह अलैह के थें और जिन के हुक्म के मुताबिक़ आपने अपने बैअत का एक तअल्लुक़ हज़रत शैख़ अम्मार यासिर रहमतुल्लाह अलैह से भी क़ायम किया जो आपके पीर सोहबत थें!

* विलादत, नाम और कुन्नियत:-

आप रहमतुल्लाह अलैह इस आलमे ख़ाक को अपने वजूदे नूर से ज़ियाबार करने सन् ५४० (540) हिजरी में तुर्कमानिस्तान के शहर ख़्वारिज़्म के ख़्यूक नामी कस्बे में तशरीफ़ लाएं!
आपका पूरा नाम अहमद बिन उमर बिन मुहम्मद अल ख़्वाफ़ी अल ख़्यूकी अल ख़्वारिज़मी है!
आप की कुन्नियत अबुल जनाब और लक़ब नज्मउद्दीन कुबरा और ताम्मतुल कुबरा है! आपको कुबरा इस वजह से कहा जाता है कि आप इल्मी मुनाज़रे में हमेशा ग़ालिब आते थें! आप शैख़ वली तराश से मशहूर व मारूफ़ थें!

* तालीमो तरबियत, मर्तबा व मक़ाम:-

आपने कई अकाबिर औलिया अल्लाह से तालीमों तरबियत हासिल किया है जैसे-
हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर गिलानी, हज़रत ज़ियाउद्दीन अबुनजीब सोहरवर्दि, हज़रत अम्मार यासिर बदलिसी, हज़रत अबुल मआली फ़राज़ी, हज़रत शैख़ हाफ़िज़ अबुल आला, हज़रत इमाम अबु ताहिर मिस्री, हज़रत बाबा फर्ख़ तबरेज़, हज़रत शैख़ रोज़बेहान

बकली सोहरवर्दि, हज़रत इस्माईल कसरी, हज़रत इब्राहीम कुर्दी अलैह रहमतो रिज़वान !

मशहूर है कि एक रोज़ आप अपने इब्तेदाइ तालीमी दौर में इमाम बग़वी हज़रत रोज़ बेहान बकली (मोहि-अल-सुन्नत) रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानकाह में उनके कुछ शागिर्दों के साथ उनकी तसनीफ़ "शरह सुन्नह" पढ़ रहे थे! जब सबक़ इख़तेताम को पहुँचा तो ख़ानकाह में एक मज्ज़ूब तशरीफ़ ले आएं! उन मज्ज़ूब की निगाहें कीमिया असर जैसे ही हज़रत नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह पर पड़ी आप की तबियत मुतग़ैर हो गयी और जो सबक़ आपने पढ़ा था सब भूल भाल गए यहाँ तक कि आपकी ज़बान सुन और ताक़त ए गुफ़्तगू सल्ब हो गयी! थोड़ी देर में जब वोह दरवेश ख़ानकाह से रूख़सत हुएं तो आपने लोगों से दरयाफ़्त किया कि ये बुज़ुर्ग कौन थें? लोगों ने बताया कि ये मज्ज़ूब व महबूब इलाही हज़रत बाबा फ़र्ख़ तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह थें!
वोह रात आपकी बड़ी बेताबी से गुज़री! दूसरे दिन आप अपने उस्ताद मोहतरम और चंद हम सबक़ हज़रात को लेकर हज़रत बाबा फ़र्ख़ तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह की
ज़ियारत को उनकी ख़ानकाह तशरीफ़ ले गऐं! अभी
मजलिस में आप बैठे थे कि बाबा फ़र्ख़ तबरेज़ का
जिस्म फूलना शुरू हो गया और जिस्म का सारा कपड़ा फट गया!
थोड़ी देर बाद जब हज़रत फ़र्ख़ तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह अपनी असली हालत पर लौटें तो अपना वो कपड़ा हज़रत नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह को अता किया और इरशाद फ़रमाया "कि ऐ नज्मउद्दीन" अब तू अपना वक़्त दफ़्तर पढ़ने में ज़ाया न कर बल्कि सिर्रे दफ़्तर ए आलम बन जा! बाबा फ़र्ख़ तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह का वोह लिबास जैसे ही हज़रत नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह ने ज़ेब तन किया आपकी निगाह फ़र्श ता अर्श तमाम चीजों पर हावी होने लगी और बातिन में अल्लाह के सिवा कुछ बाक़ी न रहा! दूसरे दिन मदरसे में सबक़ पढ़ने बैठे थें कि
आँखों के सामने हज़रत फ़र्ख़ तबरेज़ रहमतुल्लाह

अलैह का चेहरा नमुदार हुआ और इरशाद फ़रमाया "कि ऐ नज्मउद्दीन" कल तुम इल्मुल यक़ीन से गुज़र गये आज फिर ज़ाहिरी इल्म हासिल करने बैठ गये,, हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह ने उसी वक़्त
किताब पढ़ना छोड़ दिया! थोड़े दिनों बाद आप अपने अधूरे तसनीफ़ को मुकम्मल करने की ग़रज़ से बैठे हि थें कि बाबा फ़र्ख़ तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह फिर सामने नज़र आऐं और कहने लगे "कि ऐ नज्मउद्दीन" शैतान ने तुम्हें फिर दूसरी तरफ लगा दिया; 'ख़बरदार उसके बहकावे में न आना'! हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह ने उसी दिन काग़ज़ कलम को एक जानिब किया और ख़ुद को ख़ुदा से वाबस्ता कर लिया! आप मक़ामे फ़र्दानियत पर फ़ाएज़ अकाबिर औलिया अल्लाह से थें! वक़्त के तमाम औलिया व उलेमा आप को अपना पेशवा व सरदार तस्लीम करते थें! आप तमाम उलूम मरूजह व उलूम ज़ाहिरो बातिन में दस्तगाह कामिल रखते थे! आप अक्सर अहदियत में मुस्तग़रक रहते थें! आप की ज़ुबाने मुबारक से जो दुआ निकलती वो मुस्तजाबुद्दावात होती थी!

* हुसूल ख़िरका-ख़लाफ़त:-

-: आपको हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर गिलानी रहमतुल्लाह अलैह से ख़लाफ़त व इजाज़ते क़ादिरया हासिल थी!

-: हज़रत शैख़ इस्माईल कसरी रहमतुल्लाह अलैह से तरीक कुमैलिया की ख़लाफ़त व इजाज़त हासिल थी!

-: हज़रत बाबा फर्ख़ तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह ने भी अपना ख़िरका आपको अता किया था!

-: हज़रत शैख़ अबुनजीब सोहरवर्दि रहमतुल्लाह अलैह से सिलसिलाए सोहरवर्दिया की ख़लाफ़त व इजाज़त हासिल हुई!

-: हज़रत शैख़ अम्मार यासिर बदलिसी रहमतुल्लाह अलैह ने भी आपको ख़िरका व ख़लाफ़त सोहरवर्दिया से सरफ़राज़ फ़रमाया!

* आपके कश्फ़ो करामात:-
जैसा कि पहले ये बयान हो चुका है कि हज़रत नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह शैख़ वली तराश से मशहूर थें! वजह उसकी ये थी कि आप हालते वज्द में जिस किसी पर निगाह डालते उसे मर्तबा वलायत तक पहुँचा देते थें! मशहूर है कि एक दफ़ा एक सौदागर आप की ख़ानकाह में हाज़िर हुआ आप उस वक़्त कैफ़ के आलम में थें, जोहि आपने अपनी निगाहे कीमिया असर उस सौदागर पर डाली उसे वलायत क़ुबरा पर फ़ाएज़ फ़रमा दिया! फिर उस सौदागर को क़ुतुब-अल-इरशाद बना कर उसके मुल्क रवाना किया!

इसी तरह एक रोज़ हालते वज्द में आप की नज़र एक कुत्ते पर पड़ी! कुत्ता बेख़ुद हो गया और शहर छोड़ कर बियाबान का रुख़ किया! उस दिन के बाद लोगों ने देखा कि उस शहर के तमाम कुत्ते उसके इर्द-गिर्द हल्क़ा कर के बाअदब बैठ जाया करते थें और अपना-अपना सर ज़मीन पर रख दिया करते थें! कुछ दिन बाद वोह कुत्ता मर गया तो हज़रत के हुक्म के मुताबिक़ उसे दफ़्ना दिया गया!

इसी तरह एक रोज़ की बात है कि आसमान में एक बाज़ एक कमज़ोर चिड़िया का पीछा कर रहा था! इतने में हज़रत की निगाह उस चिड़िया पर पड़ी! फिर तो उस चिड़िया में इतनी ताक़त आ गयी कि उसने पीछे मुड़कर उस बाज़ का शिकार किया और उसे हज़रत के क़दमों में ला फेंका!

इसी तरह आपके लाताएदाद वाक़ेआत हैं! कहाँ तक ये फ़कीर तज़किरह इसका इस अदना किताब में दर्ज करे! बस हज़रत शैख़

नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह फ़र्द ज़माना, तस्सवुफ़ व तरीक़त में यागाना रोज़गार थें! आप की ख़्वारिक कश्फ़ व करामात तमाम आलम में मशहूर थी!

* सिलसिला-ए-इमामिया सोहरवर्दिया:-
आप की निज़बते रूहानी हज़रत शैख़ अम्मार यासिर रहमतुल्लाह अलैह के तोस्त से आईम्मा-ए-सादात तक इस तरह से पहुँचती है-

* हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अम्मार यासिर रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन अबुनजीब सोहरवर्दि रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अहमद ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अबु-बक्र नस्साज रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अबुल क़ासिम गुरगानी रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अबु अली कातिब रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अली रोदबारी रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अबुल क़ासिम कुशेरी रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अबु अली दक़्क़ाक़ रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अबुल क़ासिम नसीराबादी बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ अबुबक्र शिबली रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ सिर्रि सोख़ती रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत शैख़ मअरूफ़ करख़ी रहमतुल्लाह अलैह
* हज़रत सैय्यदना इमाम अली रज़ा अलैहिस्सलाम
* हज़रत सैय्यदना इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम
* हज़रत सैय्यदना इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम
* हज़रत सैय्यदना इमाम मुहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम
* हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम

* हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम
* हज़रत सैय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम
* हज़रत सैय्यदना इमाम अली अलैहिस्सलाम
* हज़रत सैय्यदना व मौलाना मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम-

* आपकी शहादत व मज़ार मुबारक:-

आपकी शहादत १० (10) जमादिउल अव्वल ६१८ (618) हिजरी में चंगेज़ ख़ान तातारी के लशकर से मुकाबला करते हुऐ हुई! मशहूर है कि शहादत के वक़्त एक तातारी का बाल आपके हाथ में आ गया था! आपने बाल इतनी ज़ोर से पकड़ रखा था कि कोई शख़्स उसे छुड़ा न सका बिलआख़िर उसे काट कर छुड़ाया गया!

* आप का मज़ार मुबारक तुर्कमानिस्तान के शहर कोनिया उरगेन्च के एक कस्बा ख़्वारिज़म में मर्जे ख़लायक ख़ासो आम है!

* आपके ख़ुलेफ़ाकिराम और उनसे जारी होने वाले दीगर सलासिल-ए-उज़मा:-

यूँ तो लाखों लोग आपके निगाहें कीमिया असर से दरजा-ए-कमाल को पहुँचे हैं क्योंकि आपने मुमालिकते इस्लामिया के कई मुल्कों की सैर की है और हर जगह रुश्दो इरशाद की दरिया बहाई जैसे- मिस्र, शाम, ईरान, इराक़! लेकिन बाज़ ख़ुलफ़ाकिराम ऐसे भी हैं कि जिन के वजूद नूर से रूहानी दुनिया के आफ़ताब व माहताब रौशन व ताबाँ हैं! जैसे-

(१) हज़रत शैख़ सआदउद्दीन हमवोई:-
जिन्हें मुहम्मद बिन अल मोएद बिन अबि बक्र बिन अबुल हुसैन

बिन मुहम्मद बिन अल शैख़ इस्माईल अब्दा अंसारी कहते है! सन् विलादत ५७२ (562) हिजरी और विसाल ६२४ (625) हिजरी है! आप का मज़ार मुबारक बहराबाद ख़ुरासान में है! आप मक़ामे फ़र्दानियत पर फ़ाएज़ साहिबे इल्म ज़ाहिर व बातिन थें! आपकी कई तस्नीफ़ात मशहूर व मअरूफ़ है जैसे- सुजंजुल अरवाह व नक़ूशुल अरवाह, सकीनतुस्सालेहीन, क़ल्ब अनमुनक़ल्ब, महबूब अलमुहिब्बीन व मतलूबउल वासलीन, अल मिस्बाह फि तस्सवुफ़ और कश्फ़उल महजूब वग़ैरह!
आप से सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया हमवोईया सिलसिला आगे बढ़ा!

(२) हज़रत शैख़ रज़िउद्दीन अली लाला ग़ज़नवी:-
आप का नाम अली, लक़ब रज़िउद्दीन, उर्फ़ लाला और वालिद का नाम सईद जुवैनी था! आपकी सन् विलादत ५५५ (555) हिजरी और विसाल ६४२ (642) हिजरी है! आप को "लाला" कहा जाने की वजह ये है कि आप अफ़गानिस्तान के रहने वाले थे और लाला अफ़गानी ज़बान में बिरादर बुज़ुर्ग को कहा जाता है! आप अपने वक़्त के क़ुतुबुल मदार थें! आप शैख़ मुजद्दिदुद्दीन बग़दादी और शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा के मुरीद थें! आप बहुत बड़े शायर और नश्र निगार भी थें! आप बहुत बड़े वसीह उल मशरब शैख़ थें! लगभग एक सौ तेरह अहले फ़ज़्ल व कमाल से मुलाक़ात की और उन से रूहानी फ़ैज़ और कमालात और ख़िरकह हासिल किएं! आप का मज़ार नवाह ग़ज़नी में दश्त लाला से मौसूम है! हज़रत शैख़ रज़िउद्दीन अली लाला ग़ज़नवी से आगे चलकर हज़रत शैख़ अलाउद्दौला सिमनानी से होते हुए सिलसिला कुबराविया फ़िरदौसी की दो मशहूर शाख़े हुईं एक सिलसिला-ए-हमदानिया जो हज़रत अमीर कबीर मीर सैय्यद अली हमदानी से चला और दूसरा सिलसिला नूर-बख़्शिया है जो हज़रत मीर सैय्यद नूर बख़्श से चला! और हज़रत मख़दूम अशरफ़ सिमनानी पर ये दोनों शजरह यकजा होकर अशरफ़ी कहलाया!

(३) हज़रत शैख़ मुजद्दिदउद्दीन अहमद बग़दादी:-
आप का नाम मुजद्दिदउद्दीन कुन्नियत अबु सईद लक़ब अबुल फ़तह और वालिद का नाम मोईद बग़दादी है! आपकी विलादत सन् ५५४ (554) हिजरी में बग़दाद में हुई! आपके वालिद और वालिदा अपने वक़्त के कामिल लोग थें और मशहूर तबीबों मे शामिल होते थें! आपकी इब्तेदाई तालीमों तरबियत अपने वालिदैन के ज़ेरे साया हुई! फिर बग़दाद के साहिबाने इल्म से तालीम हासिल किया और ख़िरका ख़लाफ़त हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया! आप अपने वक़्त के कामिल औलिया अल्लाह से थें! आपकी शहादत सन् ६०७ (607) हिजरी में हुई और आपका मज़ार मुबारक हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह के ख़तीरे में है!

(४) हज़रत शैख़ बाबा कमालउद्दीन जुन्दी:-
आप का पूरा नाम कमालउद्दीन मसूद जुन्दी था! आपको बाबा कमाल जुन्दी भी कहा जाता है! आपकी विलादत ख़ुजन्द मावरुन्नहर में हुई! हालते शबाब में हज की अदायगी के बाद आप तबरेज़ में मुक़ीम हुए जहां का बादशाह सुल्तान हुसैन जलायर आप का मोतकिद था! आप साहिबे दीवान शायर और कामिल औलिया अल्लाह से थें! हज़रत शम्स तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत फख़्रउद्दीन ईराक़ी रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत मौलाना अहमद आपके मुरीदों में से थें! आप का विसाल तबरेज़ में हुआ और वहीं आपकी मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!
आपसे सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया जुन्दिया सिलसिला आगे बढ़ा!

(५) हज़रत शैख़ सैफ़उद्दीन अबुल मआली बाख़रज़ी:- आप की विलादत

५८६ (586) हिजरी में "बाख़रज़" नेशापुर में हुई! आप शैख़-ए-आलम, मोहद्दिस और आरिफ़ कामिल थें! आप ख़्वाजा फ़तेहाबादी से भी जाने जाते हैं! आपने कई साहेबान इल्म से तालीम हासिल किया जैसे शैख़ ताजउद्दीन महमूद आशानी, शम्सुल उलेमा कुर्दी, शैख़ जमालुद्दीन अहमद महमूदी बुख़ारी, शैख़ रशीदउद्दीन यूसुफ़ फ़िदी, शैख़ शहाबउद्दीन उमर सोहरवर्दि और ख़िरका ख़िलाफ़त हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया जिन्होंने आपको ख़िदमते ख़ल्क के लिए बुख़ारा रवाना किया और जहाँ आपने कुबराविया सिलसिला ख़ूब फैलाया! आप के ख़ुलफ़ाकिराम में शैख़ बद्रउद्दीन समरक़न्दी रहमतुल्लाह अलैह से सिलसिला फ़िरदौसिया का फ़रोग़ दिल्ली में हुआ और उनके बाद उनके मुरीद शैख़ रुक़्नउद्दीन फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह ने इस सिलसिले को आगे बढ़ाया!
हज़रत शैख़ सैफ़उद्दीन बाख़रज़ी का विसाल २५ (25) ज़िक़आद ६५९ (659) हिजरी में हुआ और आपका मज़ार मुबारक फ़तेहाबाद बुख़ारा में मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!
आप से सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया बाख़रज़िया सिलसिला आगे बढ़ा!

(६) हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन अब्दुल्लाह राज़ी:-
आपका पूरा नाम अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन शाहावर बिन असदी अल राज़ी है! आपको नज्मउद्दीन दाई से भी जाना जाता है! आपकी विलादत सन् ५७३ (573) हिजरी में मुल्क रे में हुई! आप आरिफ़े रब्बानी और आलमे इस्लाम में तस्सवुफ़ की बाअसर शख़्सियतों मे से एक हैं! आपकी तस्नीफ़ात में से "मिरसादुलइबाद" काफ़ी मशहूर है! आपका विसाल सन् ६४५ (645) हिजरी में हुआ और आपका मज़ार मुबारक बुख़ारा में मर्ज ख़लायक ख़ासो-आम है!

(७) हज़रत शैख़ मौलाना बहाउद्दीन वलद :-

आपका पूरा नाम बहाउद्दीन वलद मुहम्मद इब्न हुसैन ख़तीबी और लक़ब सुल्तानउल उलेमा है! आपकी विलादत ५४६ (546) हिजरी में बल्ख़ (ख़ुरासान) में हुई! आप हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतउल्लाह अलैह के वालिदे मोहतरम और हज़रत हुसैन बिन अहमद ख़तीबी के फ़रज़न्द हैं! आप का ख़ानदान अपने इल्म हिल्म व बुज़ुर्गी में मशहूर व मारूफ़ था! आप अपने बाप दादा के नक़्श क़दम पर चलते हुए मुफ़्तीए आज़म हुऐं! आप कई शहरों की ख़ानकाह में दर्स व तदरीस के लिए तशरीफ़ ले जाया करते थे! आख़िर में आपके ख़ानदान ने अनातोलिया में क़याम किया फिर वहां से कूच मक़ाम कर के आप कोनिया आबाद हुएं और जहाँ एक ख़ानकाह क़ायम करके आपने मस्नदे सुलूको इरशाद को आरास्ता किया! आप का विसाल सन् ६२७ (627) हिजरी में कोनिया में हुआ और वहीं आप का मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!

(८) हज़रत शैख़ ऐनुल ज़मान जमालउद्दीन गेली:-
आप भी शायर बेमिस्ल ज़ाहिदे ज़माँ और शैख़ दौरां थें! एक रोज़ जब आपने ये इरादा किया कि शैख़ की ख़िदमत में हाज़री दी जाए तो कुतुबख़ाने में जाकर अक़ली व नक़ली की लताएफ़ में से एक मजमुआ को रास्ते के लिए इंतेख़ाब किया, कि जो रास्ते में उनका मोनिसे सफ़र हो सके! जब आप ख़्वारिज़म के पास पहुंचे तो रात हो गई! उस रात ख़्वाब में आप देखते क्या हैं कि शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़रमाते हैं कि "ऐ जमालउद्दीन अपनी गठरी को फेंक कर आ"! आप ख़्वाब से बेदार हो कर ये सोचने लगें कि ये गठरी है क्या? मेरे पास तो कुछ भी नहीं है! लेकिन दूसरे और तीसरे रात भी आपने वही ख़्वाब देखा! तीसरे रात शैख़ से आपने पूछ हि लिया कि आख़िर गठरी है क्या? शैख़ ने फ़रमाया वो मजमुआ जो तुमने जमा कर रखा है! आप सुबह जब बेदार हुऐ तो वो मजमुआ आपने दरिया में फेंक दिया! उसके बाद आप शैख़ के हुज़ूर हाज़िरे ख़िदमत हुएं तो शैख़ ने फ़रमाया कि अगर वो मजमुआ तुम ना फ़ेकते तो तुम्हें कुछ फ़ायदा न होता! फिर शैख़ ने आपसे चिल्ला पूरा

करवाया और ख़िरका ख़लाफ़त अता करके "ऐनुलज़माँ" के लक़ब से सरफ़राज़ फ़रमाया! आप ख़्वारिज़म से काज़्विन को तशरीफ़ ले गऐं जहाँ का सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद बिन हसन आपकी हुरमत व तौक़ीर बजा लाया! आपका विसाल सन् ६५१ (651) हिजरी में हुआ और काज़्विन में आपका मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है! आप से सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया ज़ाहिदिया सियाहपोश सिलसिला आगे बढ़ा!

(९) हज़रत इमाम फख़्रउद्दीन राज़ी:-
आपका पूरा नाम अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद फ़ख़्रउद्दीन अल राज़ी अल शाफ़ई है! आपकी विलादत सन् ५४४ (544) हिजरी में मुल्क रे में हुई! आपके वालिद माजिद शैख़ ज़ियाउद्दीन उमर इब्न अबुल क़ासिम सुलेमान इब्न नासिर अंसारी है! आप शैख़ कामिल और मुजद्दिद आज़म थें! आप ख़्वारिज़म मे शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से होते हुए बुख़ारा समरक़न्द पहुँचें और ११९० (1190) ईस्वी में ग़ज़नी और फिर वहां से पंजाब आऐं! आख़िर में आपने हेरात में मुस्तक़िल क़याम किया और वहां एक मदरसे में शैख़ुल इस्लाम की हैसियत से दर्स व तदरीस में मसरूफ हुएं! मुफ़ातेहुल ग़ैब (तफ़्सीर कबीर) आप की मशहूर तसनीफ़ है! सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद ख़्वारिज़्म शाह आपके अक़ीदतमंदो में था! सन् ६०६ (606) हिजरी में कुछ हासिदों के ज़हर देने के सबब हेरात में आपका विसाल हो गया और वहीं आपका मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!

(१०) हज़रत शैख़ कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी अल कड़वी:-
आप का नाम मुहम्मद, अमीरे कबीर और कुतुबउद्दीन आपके अलक़ाब और कुन्नियत अबुल हसन है! आपके सन् विलादत के मुताल्लिक अलग अलग क़ौल पाए जाते हैं! लेकिन सही ये है कि आपकी विलादत सन्

५५१ (551) हिजरी में मदीना मुनव्वरा में हुई!
आपके वालिद माजिद शैख़ुल आलम इमामुल आईम्मा व असफ़िया हज़रत सैय्यद रशीदउद्दीन अहमद अल मदनी अल ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैह हैं जो अपने इल्मी हल्क़ा के साथ सरज़मीने मदीना से बग़दाद तशरीफ़ लाएं! उस वक़्त बग़दाद में शैख़ मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात मर्ज ख़लायक बनी हुई थी! जिस वक़्त हुज़ूर ग़ौसे आज़म को शैख़ अहमद मदनी के आमद की ख़बर मिली उस वक़्त अपनी ख़ानकाह से निकल कर आपका ख़ैर मख़दम किया और आपको अपनी ख़ानकाह में ठहराया! हज़रत शैख़ रशीदउद्दीन अहमद मदनी और हज़रत शैख़ मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी सादात हसनी और औलाद अब्दुल्लाह अल महज़ हसनी हुसैनी अलैहिस्सलाम से हैं! हज़रत शैख़ मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी ने अपनी बड़ी हमशीरह बीबी उम्मे ज़ैनब को हज़रत शैख़ रशीदउद्दीन अहमद मदनी की ज़ौजियत में दे दिया जिन के बत्न से हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी पैदा हुएं! चुनाँनचे हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी की परवरिश इन्हीं जलीलुल कद्र उलेमा व औलिया के आग़ोशे रहमत व शफ़क़त में परवान चढ़ी और अवाएल में तालीमों तरबियत भी अपने वालिद शैख़ रशीदउद्दीन अहमद अल मदनी और अपने मामू शैख़ मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी से पाई और इनके विसाल के बाद शैख़ ज़ियाउद्दीन अबुनजीब सोहरवर्दि के सामने ज़ानु-ए-तलम्मुज़ हुएं लेकिन मुकम्मल तसकीन हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह से हासिल हुई और कुबराविया फ़िरदौसिया रंग आप पर ग़ालिब रहा चुनाँनचे हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह ने आपको ख़िरका व ख़लाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया!

हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह वस्ल के इमाम, मक़ामे समदियत और सिद्दीक़ियत पर फ़ाएज़ ऐसे मक़बूल बारगाहे इलाही बुज़ुर्ग हैं कि ज़ाहिर और पोशीदा तामाम औलिया आपके हुज़ूर सरे ख़म तसलीम रखते हैं! आपको आपके वालिद

हज़रत शैख़ रशीदउद्दीन अहमद मदनी और आपके मामू हज़रत शैख़ मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी से आबाई बैअत व ख़लाफ़त और सज्जादा हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम भी हासिल है! इन तमाम ऐज़ाज़ो इकराम के अलावा आप ग़ाज़ी व फ़ातेह मारकाए हिंद भी हैं! आपको हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारगाह से फ़तेह व नुसरत, फ़रोग़ दीने हक़ और हिंदल वली होने की बशारत भी हासिल हुई! आपसे जारी होने वाला सिलसिला कुबराविया कबीरिया क़ुतबिया कहलाया और हिंद व सिंध में फैल गया लेकिन इस सिलसिले के मशाऐख़उज़ाम बेमिस्ल सिफ़अतों के हामिल होने के बावजूद अम्र मख़फ़ी के तहत पसे पर्दा रहें (इस मौज़ू पर मज़ीद मालूमात के लिए फ़कीर की तसनीफ़ "चिराग़ ख़िज़्र" का मुताला करें)!

जैसा कि ऊपर ज़िक्र हो चुका है कि हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के जानिब से हिंदुस्तान जाने का हुक्म और फ़तेह की बशारत मिली जिसके तहत आप मदीना मुनव्वरा से अपने तीनों शहजादों और तमाम मुरीदों के हमराह बग़दाद व ग़ज़नी होते हुए हिंदुस्तान तशरीफ़ लाएं और सरज़मीने दिल्ली पहुँचे जहाँ सुल्तान क़ुतुबउद्दीन ऐबक़ की हुकूमत थी जिसने आपकी आमद पर आपके हुरमत व तौक़ीर के ख़ातिर आपकी राहों में अपनी पलकें बिछा दिया और आपके दस्त हक़ परस्त पर बैअत होकर आपके हल्क़ा ए इरादत में शामिल हो गया! दिल्ली से होते हुऐ आप अपने फरज़न्दों व मुरीदों कि जिसमें कुतुबउद्दीन ऐबक भी शामिल था और उसके तमाम फौजी लशकरों के साथ राजा जय चँद राठौर पर हमलावर हुएं जिसकी हुकूमत हिन्दुस्तान के मरकज़ कन्नौज व कड़ा पर थी और जिसके हुकूमत की हद् बनारस तक थी! लिहाज़ा आपने बशारते नबवी के तहत राजा जय चँद राठौर के तमाम छोटे बड़े हुकूमती इलाकों को फतेह करते हुए पाये तख़्त "कन्नौज" को भी फतेह कर लिया और फिर उसके दारूल सल्तनत (राजधानी) "कड़ा" पर हमलावर होकर उसे अपनी हुकूमत में शामिल करके परचम इस्लाम को बुलन्द किया और इस बशारते नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

को भी पूरा कर दिया "कि सरज़मींने हिंद पर इस्लाम का परचम मेरे फ़रज़न्द क़ुतुबउद्दीन के हाथों फैरेगा"!

हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह ने सरज़मीने कड़ा में फ़रोग़ उलूम दीन के लिए हिंदुस्तान की सबसे पहली दर्सगाह व ख़ानकाह की संग बुनियाद रखी जिससे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ये भी बशारत पूरी हुई "कि हिंदुस्तान में इस्लाम की इशाअत मेरे फ़रज़न्द क़ुतुबउद्दीन पर मुनहसिर है"!

हिंदल वली हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी अल कड़वी रहमतुल्लाह अलैह और हिंदल वली शैख़ मोईनउद्दीन संजरी अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह एक ही वक़्त में हिंदुस्तान तशरीफ़ लाने वाले, सरकार अलैहिस्सलाम से हिंदल वली की बशारत पाने वाले, शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी से फ़ैज़याफ़्ता, हुज़ूर ग़ौसे आज़म के भांजे और आपस में ख़लेरे भाई लगते थें!

किताब "तबक़ात नासरी" में हैं कि हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी अल कड़वी रहमतुल्लाह अलैह सुल्तान बहराम शाह बिन सुल्तान अलतमश के अहदे हुकूमत सन् ६३७ (637) हिजरी में देहली के शैख़ुल इस्लाम के मंसब पर फ़ाएज़ हुएं और सुल्तान नासिरउद्दीन महमूद के अहदे हुकूमत सन् ६५३ (653) हिजरी में सुबुग्दोश हुएं!

हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह का विसाल सन् ६७७ (677) हिजरी में सर ज़मीने "कड़ा" पर हुआ और वहीं आपका मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!

आपसे सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया कबीरिया क़ुतबिया सिलसिला आगे बढ़ा!

सिलसिला व ख़ानदान कुबराविया कबीरिया क़ुतबिया से इस कसरत से

जलीलुल क़द्र औलिया का ज़हूर हुआ कि दूसरे सिलसिला व ख़ानदान में ढूंढने से न मिलेगा जैसे-

* हज़रत शैख़ निज़ामउद्दीन हसन मदनी (कड़ा)
* हज़रत शैख़ क़वामउद्दीन महमूद मदनी (देहली)
* हज़रत शैख़ ताजउद्दीन मदनी (बदायूं)
* हज़रत शैख़ रुक़्नउद्दीन मदनी (कड़ा)
* हज़रत शैख़ सद्रउद्दीन मदनी (कड़ा)
* हज़रत शैख़ काज़ी क़ुतुबउद्दीन (बदायूं)
* हज़रत शैख़ काज़ी अलाउद्दीन (बदायूं)
* हज़रत शैख़ अलाउद्दीन जवेरी (बुलंद शहर)
* हज़रत शैख़ अहमद पीर जनम (पंजाब)
* हज़रत शैख़ शम्सउद्दीन मौलाना ख़्वाजगी (कड़ा)
* हज़रत शैख़ अबुजाफ़र अमीर माह बहराइची (बहराइच)
* हज़रत शैख़ तक़िउद्दीन झूँस्वी (झूँसी इलाहाबाद)
* हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन मुफ़स्सिर ज़ाहिद (कड़ा)
* हज़रत शैख़ तक़ि अंसारी (सिंध)
* हज़रत शैख़ फ़ज़्लउल्लाह गोशाएँ क़ुतबी (बारह दरी बिहार शरीफ़)
* हज़रत शैख़ महमूद क़ुतबी (बारह दरी बिहार शरीफ़)
* हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन क़ुतबी (बारह दरी बिहार शरीफ़)
* हज़रत शैख़ मुत्तकी क़ुतबी (बारह दरी बिहार शरीफ़)
* हज़रत शैख़ मुहम्मद नक़ी क़ुतबी (बारह दरी बिहार शरीफ़)
* हज़रत शैख़ मुहम्मद तक़ि क़ुतबी दरवेश बेरिया (बारह दरी बिहार शरीफ़)
* हज़रत शैख़ निज़ामुद्दीन क़ुतबी (बारह दरी बिहार शरीफ़)
* हज़रत शैख़ अहलउल्लाह क़ुतबी (बाड़ह)
* हज़रत शैख़ मुहम्मद जाफ़र क़ुतबी (बाड़ह)
* हज़रत शैख़ ख़लीलउद्दीन क़ुतबी (मुनिमाबाद पटना)
* हज़रत शैख़ मख़दूम मुहम्मद मुनिम पाक (पटना)
* हज़रत शैख़ अहमद क़ुतबी (माल्तीपुर बँगाल)

* हज़रत शैख़ मुहम्मद सालेह क़ुतबी (फ़तेहपुर)
* हज़रत शैख़ बाबउल्लाह क़ुतबी (पाटी गली मानिकपुर)
* हज़रत शैख़ ख़लील क़ुतबी (मानिकपुर)
* हज़रत शैख़ क़ुतुबउद्दीन सानी क़ुतबी (जायस)
* हज़रत शैख़ अलाउद्दीन क़ुतबी (नसीराबाद)
* हज़रत शैख़ अलमउल्लाह क़ुतबी (तकिया रायबरेली)
* हज़रत शैख़ मुहम्मद अद्ल उर्फ़ शाह लाला क़ुतबी (रायबरेली)
* हज़रत शैख़ काज़ी हसन क़ुतबी (अझवा)
* हज़रत शैख़ फ़ैज़उल्लाह क़ुतबी (कौराली सोराम)
* हज़रत शैख़ मीर अली क़ुतबी (रुदौली)
* हज़रत शैख़ लाल मुहम्मद क़ुतबी (हंसवा)
* हज़रत शैख़ अब्दुल रसूल क़ुतबी उर्फ़ सैय्यद औमरी (खागा फ़तेहपुर)
* हज़रत शैख़ पीर क़ुतबी (मुनिमाबाद रायबरेली)
* हज़रत शैख़ मुहम्मद अली क़ुतबी (टोंक राजस्थान)
* हज़रत शैख़ अहमद मुहाजिर मदनी क़ुतबी (रोनी मलाबा)
* हज़रत शैख़ ताजउद्दीन सानी क़ुतबी (आज़मगढ़)
* हज़रत शैख़ मख़दूम ग़ुलाम अशरफ़ अली क़ुतबी (आमडारी)
* हज़रत शैख़ मुहम्मद अबुसईद क़ुतबी (हमीरपुर)
* हज़रत शैख़ इस्माईल क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत शैख़ जलालुद्दीन जलाल क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत शैख़ हमज़ा क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत शैख़ अब्दुल रसूल क़ुतबी दरवेश (कोर्रह सादात)
* हज़रत सुल्तानुल औलिया शैख़ पीर मुहम्मद क़ुतबी (टीले वाली मस्जिद लखनऊ) :- आप मशाऐख़ उज़ाम मुवाहिदे अकबर, बुज़ुर्ग आलीशान, क़वी हाल, बुलन्द हिम्मत, तर्क व तजरीद में कामिल, करामते इश्क से मुज़ईयन, इख़लाक पसन्दीदा में दस्तगीरी रखने वाले, मक़ामे तमकीन पर फ़ाएज़, फ़र्दे वक़्त हैं! आप सादात हसनी क़ुतबी और अकाबिर कोर्रह सादात से हैं! आपकी विलादत सन् १०२७ (1027) हिजरी में मड़ियाँव जौनपुर में हुई! आप मादरज़ाद

वली हैं! कम उमरी से ख़्वारिको आदात सरज़द होने लगें थें जिनकी धूम हर सू आलम थी! कम उमरी में ही आपके वालिदा का साया सर से उठ गया! आपके वालिद बुज़ुर्गवार और चचा मोहतरम ने तालीमों तरबियत किया और आपके वालिद बुज़ुर्गवार ने ख़िरका व ख़लाफ़ते कबीरिया क़ुतबिया से सरफ़राज़ फ़रमाया! बाद विसाल वालिद मोहतरम आपने मानिकपुर का क़स्द किया और मानिकपुर पहुँचे वहाँ हज़रत शाह अब्दुल्लाह सय्याह दख्खनी से मुलाक़ात हुई जिन्होंने आपको ख़िरका व ख़लाफ़ते चिश्तिया से आरास्ता किया! हज़रत शैख़ राजू क़त्ताल से भी सुलूक का ताल्लुक क़ायम हुआ जिन से ख़िरका व ख़लाफ़त सोहरवर्दिया व क़ादिरिया हासिल किया! दिल्ली में अल्लामा हैदर से भी तरबियत पाया! लखनऊ में कारी अब्दुल क़ादिर उमरी से भी फ़ैज़याब हुएं! आपने तकमील मनाज़िले सुलूक और हुसूल इजाज़तो ख़लाफ़त के बाद लखनऊ में ही मस्नदे सुलूको इरशाद को आरास्ता किया जिस से ख़ल्क कसीर फ़ैज़याब हुई! आप का विसाल १३ (13) जमादिउल सानी सन् १०८३ (1083) हिजरी में लखनऊ में हुआ और वहीं एक टीले पर आपका मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है! जिस टीले पर आपकी दरगाह बनी हुई है वो आपके नाम के मुनास्बत से "टीला शाह पीर मुहम्मद" से मशहूर है! आपका तज़किरह किताब "बहर ज़ख़्ख़ार" "नुज़हतुल ख़वातिर" और दीगर तारीख़ों में मिलता है!

* हज़रत शैख़ मुहम्मद क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत शैख़ ग़ुलाम मीर क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत शैख़ फ़तेह मुहम्मद क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत शैख़ मुहम्मद हाशिम क़ुतबी (कोर्रह सादात)

आपने मानिकपुर में हज़रत शैख़ राजे इब्राहीम से ख़िरका व ख़लाफ़ते चिश्तिया हुसामिया हासिल किया!

* हज़रत शैख़ करीम बख़्श क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत मीर सैय्यद मुहम्मद महदी बख़्श क़ुतबी (कोर्रह सादात)
* हज़रत अल्लामा ए ज़मन मीर सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुतबी शहीद (ख़ानकाह मानिकपुर)

आपको चिश्तिया हुसामिया करीमिया से भी ख़लाफ़त व इजाज़त

हासिल थी! आपके क़ायम मक़ाम व जानशीन आपके बिरादरे असग़र हज़रत सैय्यद शाह इस्माईल क़ुतबी थें!
* हज़रत शाह अबुसईद क़ुतबी उर्फ़ मुल्लन मियाँ सज्जादा नशीन ख़ानकाह मानिकपुर! आप अपने वालिद व चचा दोनों के जानशीन हुएं हैं!
* हज़रत सैय्यद शाह ज़किउद्दीन क़ुतबी सज्जादा नशीन ख़ानकाह मानिकपुर! आप अपने बिरादरे अकबर हज़रत शाह अबुसईद क़ुतबी के जानशीन हुएं!
आपको तमाम सलासिल से ख़लाफ़त व इजाज़त हासिल थी!
* हज़रत शाह जुनैद अहमद क़ुतबी सज्जादा नशीन ख़ानकाह मानिकपुर!
* हज़रत सैय्यद शाह मोहीउद्दीन क़ुतबी (ख़ानकाह मानिकपुर)! आपको आबाई सिलसिले के फ़ैज़ के साथ साथ उवैसी तरीक पर हज़रत शाह पीर क़ासिम जो हुसामिया चिश्तिया सिलसिले के बहुत बुलन्द पाये वली गुज़रे हैं की रूह पाक से फ़ैज़ हासिल है!
* हज़रत हकीम सैय्यद शाह शम्सउद्दीन क़ुतबी (इलाहाबाद)! आपको आबाई सिलसिले के फ़ैज़ के साथ साथ अशरफ़िया चिश्तिया सिलसिले से ख़लाफ़त व इजाज़त हासिल है!
* फ़क़ीर अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद आक़िब क़ुतबी (कड़ा शरीफ़)! इस फ़कीर को आबाई सिलसिले के फ़ैज़ के साथ साथ ओवैसी तरीक पर ख़लाफ़त अमीरिया से सरफ़राज़ किया गया है! लिहाज़ा अब इस फ़कीर पर दोनों सिलसिला यकजा होकर क़ुतबिया अमीरिया हो गया! खुलासा इस अम्र का किताब "चिराग़ ख़िज़्र" में मुलाहिज़ा फ़रमाऐं!

* इन तमाम बरगुज़ीदह हस्तियों के अलावा सिलसिला फ़िरदौसिया कुबराविया से बिलवास्ता या बिलावास्ता तौर पर तरबियतयाफ़्ता और फ़ैज़याफ़्ता बुज़ुर्गों में हज़रत ख़्वाजा मोईनउद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत शाह नेमतउल्लाह वली रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत जलालउद्दीन

सुर्ख़ पोश बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह भी शामिल हैं!

* आख़ीर में फ़कीर अपने ही हाथों लिखी हुई इस हिंदी मनक़बत से ख़ात्मा इस किताब का करता है जो इसने बशाने हज़रत अमीर ँव आले अमीर लिखी है और कारीनकिराम की दुआओं का ख़्वास्तगार है!

"भाग्य जगें कड़ा भूमी के
पड़े चरण धूल कुतुब वली के
बड़ी रंग रंगीली चुनर तोरी लागे
जो रंगी तू हाथों मोरे महाबली के
तुझ पर बिराजे हैं ऐसे भाग्यवान
भाग्य संवरे तोरे जन माटी के
कृपा ही कृपा है कड़ा तोरी धरती पर
भूमी मे थाङे तोरे स्वामी हिंद के
उनकी जोत जगत् उजियाऐ
उनका प्रेम हृदय में नर नारी के
जिस कंठ में उनकी जय जयकार
उस कंठ में वाणी महाप्रभु के
मीरा क़ुतुबउद्दीन तुम जगत गुरू हो
तुम ही महाराज इस धरती प्रजा के
तुमरे चरण में शरण हर वली की
तुम ही लजपाल हर एक वली के
तुम घर सूरज चाँद भयें
जोत से झल झल सृष्टि भयी
हर पूत तुमरा अनमोल रतन
शोभा भयें हर संत मुकुट के
राजे महाराजे तुमरे दर के भिखारी
सर्व जन तुमरे भक्त पुजारी
तुम से पाया हर ने वरदान
मैं भी भिक्षु तोरे दया दृष्टि के

भाग्य जगें कड़ा भूमी के
पड़े चरण धूल कुतुब वली के"

।। फ़कीर अमीर क़ुतुबउद्दीन मुहम्मद आक़िब '

Last modified: 19:26